

HIMALAYAN FOREST RESEARCH INSTITUTE
CONIFER CAMPUS, PANTHAGHATI,
SHIMLA-171 013 (HIMACHAL PRADESH)

**Training on the Application of Mycorrhizae in Forest Nurseries and
Management of Insect-Pests and Diseases: A Report**

8th March, 2019

Himalayan Forest Research Institute, Shimla organized a training programme on “**Application of Mycorrhizae in Forest Nurseries and Management of Insect-Pests and Diseases**” on 8th March, 2019 in the Conference Hall of the institute. The training was attended by the trainees of Forest Training Institute, Chail, District Solan and members of Eco Task Forces, Kufri, District Shimla, Himachal Pradesh. The objective of the training was to apprise the trainees about the role of mycorrhizae in raising healthy planting stock and management of insect-pests and disease incidences in the nurseries of forestry species. **Dr. Ashwani Tapwal**, Scientist- E and coordinator of the training programme welcomed the participants and guests and apprised them about the training programme. **Dr. V.P. Tewari**, Director, Himalayan Forest Research Institute, Shimla inaugurated the training programme. In his inaugural address, Dr. Tewari emphasized upon the artificial application of mycorrhizal fungi during nursery operations. He was of the opinion that artificial application of mycorrhizae in nursery will help in better growth of seedlings and reduce the transplantation period considerably. He also opined that early detection of insect-pest and diseases in forests can prevent their outbreak in near future. He advised the stakeholders especially the SFD to use eco-friendly means for the insect-pest and disease management. Dr. Tewari encouraged the trainees to actively participate in the discussion to make the training programme fruitful.

During the technical session, **Dr. Ashwani Tapwal**, highlighted the importance of mycorrhizae in forest ecosystem and elaborated the technique of artificial application of mycorrhizal fungi to produce healthy and tall planting stock. **Sh. Subhas Chander**,

Scientist-D delivered talk on outbreak of white grub and termites in nursery and plantations and their management and deliberated broadly upon eco-friendly management of insect-pests with special reference to the forestry species. **Dr. Santosh Watpade**, Scientist, IARI Regional Station, Shimla highlighted the important diseases of forest nurseries and suggested their management.

During the afternoon session, **Dr. Tapwal**, highlighted the important fungal diseases of conifers and emphasized on their eco-friendly management. He suggested that different types of control measures should be combined together to devise integrated approach towards insect-pests and diseases management. **Dr. Sandeep Sharma**, Scientist- G, HFRI, delivered a talk on containerized nursery techniques of important conifers of Himachal Pradesh. During the laboratory visit, participants were made familiar with the instruments and techniques being followed for production of mass inoculum of ectomycorrhizal fungi for use nursery, major pests and disease specimens.

During plenary session of the training programme, the issues and concerns of the participants were addressed by the scientists of institute. **Dr. V.P. Tewari**, Director, HFRI, distributed the certificates of participation to the trainees. He also appreciated the participants for showing keen interest in the training programme and assured to take care of their suggestion to increase the duration of the training programme in future. **Dr. Rajesh Sharma**, Group Coordinator (Research) in his concluding remarks highlighted the importance of the training programmes conducted by the institute and emphasized upon the role of mycorrhizal fungi during nursery raising. The training programme ended with vote of thanks by Dr. Ashwani Tapwal.

GLIMPSES OF TRAINING





MEDIA COVERAGE

शिमला भास्कर

शिमला | शनिवार 09 मार्च, 2019 रामपुर • रोहड़ू • ठियोग किन्नौर • कांठझाई • कुमारसैन

वर्कशॉप • हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान पंथाघाटी में हुई माइक्रोराइजा पर कार्यशाला

समय रहते हो जाए कीट-पतंगों की पहचान तो पेड़ों को बचाया जा सकता है कई तरह की बीमारियों से

सिटी रिपोर्टर | शिमला

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान पंथाघाटी, शिमला में माइक्रोराइजा का वानिकी में महत्व एवं कीट पतंगों और बीमारियों का प्रबंधन विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम हुआ।

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में हिमाचल वन विभाग के कर्मचारी जो वर्तमान में वन प्रशिक्षण संस्थान, चायल के प्रशिक्षणार्थी हैं और इको टास्क फोर्स के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। प्रशिक्षण कार्यक्रम की प्राथमिकता माइक्रोराइजा के उपयोग द्वारा शंकुधारी वनों की स्वस्थ पौधशाला को तैयार करना और



हिमाचलवन वन अनुसंधान केंद्र में हुई वर्कशॉप में मौजूद प्रतिनिधि।

पश्चिम हिमालय क्षेत्रों के वनों में कीट पतंगों और बीमारियों की बढ़ती घटनाओं पर प्रकाश डालना और इनके प्रबंधन पर प्रदेश के विभिन्न हितकारकों में जागरूकता पर ध्यान देना रहा।

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ वीपी तिवारी ने पौधशाला में बीजाई के दौरान माइक्रोराइजल कवक के प्रयोग के बारे में बताया कि यह अंकुरित पौधों की अच्छी बढ़ोतरी के लिए मददगार

साबित होगा। उनकी यह भी राय थी कि समय रहते वनों में कीट पतंगों एवं बीमारियों की पहचान करने से भविष्य में उनके द्वारा होने वाले प्रकोपों से बचा जा सकता है उन्होंने खास तौर पर हिमाचल वन विभाग से आए हुए प्रतिभागियों को कीट पतंगों एवं बीमारियों के पर्यावरण प्रबंधन की सलाह दी।

प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान प्रतिभागियों ने संस्थान वन व संरक्षण को प्रयोगशाला का दौरा भी किया गया जहां पर प्रतिभागियों को आधुनिक माइक्रोराइजा तैयार करने की विधि एवं वनों के मुख्य कीट पतंगों एवं बीमारियों के लक्षणों पर विस्तार से जानकारी दी।

माइक्रोराइजा के महत्व बारे बताया

शिमला, 8 मार्च (ब्यूरो): हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान पंथाघाटी के सभागार में माइक्रोराइजा का वानिकी में महत्व एवं कीट पतंगों और बीमारियों का प्रबंधन विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें हिमाचल वन विभाग के चायल में कार्यरत कर्मचारी एवं इको टास्क फोर्स के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

पंजाब केसरी ई-पेपर

Sat, 09 M
https://e



वन कर्मियों ने जानी पौधों के इलाज की बारीकियां

दिव्य हिमाचल ब्यूरो - शिमला

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, पंथाघाटी, शिमला के सभागार में माइक्रोराइजा का वानिकी में महत्व एवं कीट पतंगों और बीमारियों का प्रबंधन विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम शुक्रवार को आयोजित हुआ। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में हिमाचल वन विभाग के कर्मचारी, जो वर्तमान में वन प्रशिक्षण संस्थान, चायल के प्रशिक्षणार्थी हैं एवं इको टास्क फोर्स के प्रतिनिधियों ने भी भाग लिया। प्रशिक्षण कार्यक्रम की प्राथमिकता माइक्रोराइजा के उपयोग द्वारा शंकुधारी वनों की स्वस्थ पौधशाला को तैयार करना और

उत्तर-पश्चिम हिमालय क्षेत्रों के वनों में कीट पतंगों और बीमारियों की बढ़ती घटनाओं पर प्रकाश डालना और इनके प्रबंधन पर प्रदेश के विभिन्न हितकारकों में जागरूकता पर बल देना है। इस कार्यक्रम के आरम्भ में प्रशिक्षण के समन्वयक डा. अश्वनी तपवाल, वैज्ञानिक एवं प्रभागध्यक्ष, वन बचाव प्रभाग ने अतिथियों एवं प्रतिभागियों का स्वागत किया और संक्षिप्त रूप से प्रशिक्षण कार्यक्रम का विवरण दिया। डा. वीपी तिवारी, निदेशक, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने अपने उद्घाटन अभिभाषण में पौधशाला में बीजाई के दौरान कृत्रिम माइक्रोराइजल कवक के प्रयोग पर प्रकाश डाला।

शिमला, शनिवार 9 मार्च, 2019

हिमाचल दस्तक

प्रशिक्षुओं को किया जागरूक

शिमला। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, पंथाघाटी, शिमला के सभागार में माइक्रोराइजा का वानिकी में महत्व एवं कीट पतंगों और बीमारियों का प्रबंधन विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में हिमाचल वन विभाग के कर्मचारी जो वर्तमान में वन प्रशिक्षण संस्थान, चायल के प्रशिक्षणार्थी हैं एवं इको टास्क फोर्स के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। प्रशिक्षण कार्यक्रम की प्राथमिकता माइक्रोराइजा के उपयोग द्वारा शंकुधारी वनों की स्वस्थ पौधशाला को तैयार करना और उ.पश्चिम हिमालय क्षेत्रों के वनों में कीट पतंगों और बीमारियों की बढ़ती घटनाओं पर प्रकाश डालना और इनके प्रबंधन पर प्रदेश के विभिन्न हितकारकों में जागरूकता पर बल दिया गया।

दिव्य हिमाचल

Sat, 09 March 2019

https://epaper.divyahimac

